The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 2 | March 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

माध्यमिक स्तर पर सरकारी तथा गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य : एक तुलनात्मक अध्ययन

खेमेन्द्र कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, श्री बाला जी एकेडमी मुरादाबाद

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 20/04/2025
स्वीकृति तिथि: 21/04/2025
प्रकाशनतिथि: 30/04/2025
मुख्य शब्द: माध्यमिक स्तर, मानसिक स्वास्थ्य, सरकारी तथा गैर–सरकारी ।

सारांश

माध्यमिक स्तर वह कड़ी है जहाँ पहुचते ही छात्र अपनी शिक्षा के प्रतिजागरूक होने लगते है और उनमे किसी विषय को समझने की योग्यता का विकास भी होने लगता है। इस स्तर में अध्ययनरत छात्र किशोरावस्था में होते है। इस अवस्था कि विडम्बना होती है कि बालक स्वयं को बड़ा समझते है और बडे उसे छोटा समझते है। किशोर विद्यार्थी अंतर्मुखी ओर बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले होते है। लेकिन किशोरों के माता–पिता ऐसे होते है वो उन पर वह दबाव डालते है कि आपको परीक्षा में अधिक से अधिक अंक प्राप्त करने है। ऐसे में उनके सामने समायोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है और उनके मानसिक स्वास्थ्य पर इसका तीव्र प्रभाव पड़ता है तथा किशोर भ्रमित अवस्था का शिकार हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में किशोर अकेलापन, लज्जाशील, तनाव, अल्पभासी, भय, अपराध, बोध, घबराहट, भ्रम, क्रोध आदि प्रकृति के हो जाते हैं। मन और मस्तिष्क का स्वस्थ रह कर कार्य करने की क्षमता बनाये रखना ही मानसिक स्वास्थ्य कहलाता है। मानसिक स्वास्थ्य के अभाव में व्यक्ति के विकास का मार्ग बाधित हो जाता है। माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है अथवा नही।

प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। यदि प्राथमिक शिक्षा ज्ञान प्राप्ति कि आधारशिला है और उच्च शिक्षा ज्ञान का अंतिम लक्ष्य है तो माध्यमिक शिक्षा इन दोनों के मध्य की कड़ी है । इस स्तर पर छात्र किशोरावस्था में होते है। इस अवस्था मे बालक अपने वातावरण, सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा परिवार के साथ समायोजन में कठिनाई अनुभव करता है तथा विभिन्न असामान्य व्यवहारों को दर्शाता है क्योंकि वह मानसिक रूप से असुंतलित होते है जिनका प्रभाव उनके व्यवहार में दृष्टिगोचर होता है। यह व्यवहार उनकी मानसिक अस्वस्थता को दर्शाता है। मानसिक रूप से अस्वस्थ विद्यार्थी का ध्यान शिक्षा से हटता जाता है और वह शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ता जाता है तथा शैक्षिक उपलब्धियो को प्राप्त करने में असफल रहता है। विपरीत परस्थितियां विद्यार्थी में मानसिक तनाव उत्पन्न करती है जिससे उनमें चिंता, कुंठा, तनाव, निराशा उत्पन्न हो जाती है और उसका रूझान शिक्षा से हटकर असामाजिक क्रियाओं में लगने लगता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

माध्यमिक स्तर, प्राथमिक व उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। जहां पहुंचते ही छात्र अपनी शिक्षा के प्रति जागरूक होने लगते हैं और उनमें किसी विषय की गहनता से समझने की योग्यता का विकास होने लगता है। इस स्तर में अध्ययनरत छात्र किशोरावस्था में होते हैं। इस अवस्था की विडंबना होती है कि बालक स्वयं को बड़ा समझते हैं और बड़े उसे छोटा समझते हैं। कतिपय किशोरों के माता–पिता ऐसे होते हैं कि वो उन पर दबाव डालते हैं कि आप को उच्चतम अंक प्राप्त करने हैं। ऐसे में उनके समक्ष समायोजन की समस्या उभरती है। अतः उनके मानसिक स्वास्थ्य पर तीव्र प्रभाव पड़ता है और किशोर भूमित अवस्था का शिकार हो जाता है। मन और मस्तिष्क का स्वस्थ रहकर कार्य करने की क्षमता बनाए रखना ही मानसिक स्वास्थ्य है। मानसिक स्वास्थ्य के अभाव में व्यक्ति के विकास का मार्ग कुंठित हो जाता है। मानसिक स्वास्थ्य चर को लेकर विभिन्न क्षेत्रों मे शोधकार्य हुये हैं, लेकिन रामपुर जनपद मे मानसिक स्वास्थ्य चर पर शोधकार्य कम हुये हैं। अतः माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन समस्या को शोधकर्त्री ने अपने शोध के विषय के रूप में चुनाव किया।

अध्ययन के उददेश्य–

- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना करना।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन की विधि–

प्रस्तुत शोध कार्य की समस्या के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध की जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध कार्य में रामपुर जनपद के समस्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को शोध जनसंख्या के रुप में सम्मिलित किया गया है।

शोध का न्यादर्श–

शोध के न्यादर्श के रूप मे शोध जनसंख्या मे से 100 विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा चयन किया गया है।

शोध का उपकरण–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ो के संग्रहण के लिए अरुण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

शोध अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर उपयुक्त वर्णनात्मक सांख्यिकी मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण अपनाया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

तालिका–1

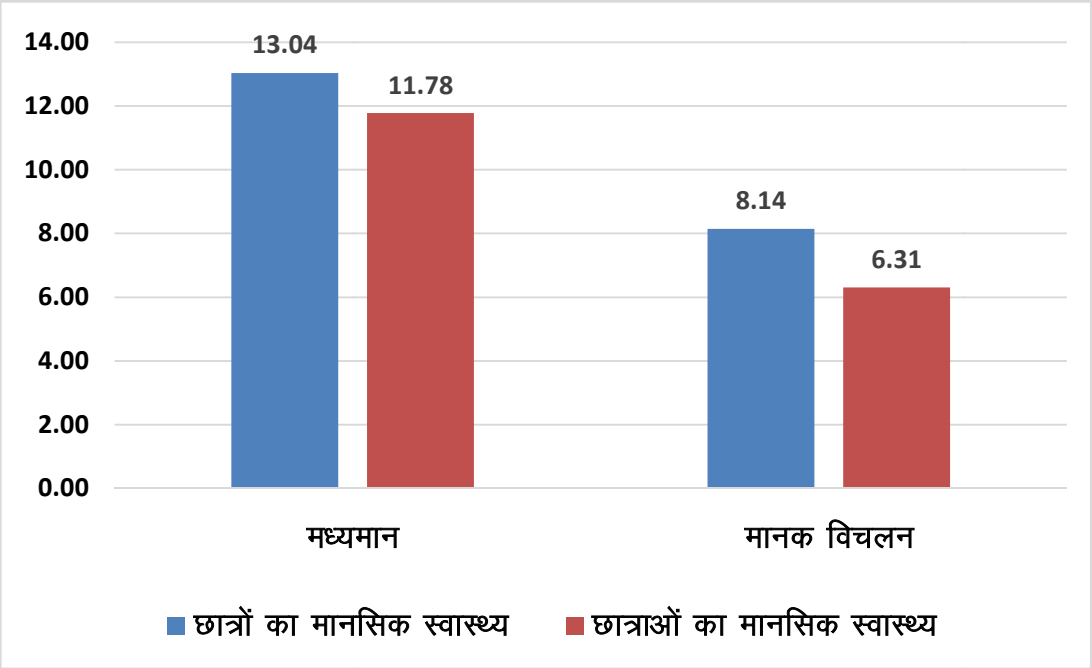
माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना

छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य		छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य		टी–मान ;कत्रि98द्ध	सार्थकता स्तर
मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	1.62	असार्थक
13.04	8.14	11.78	6.31		

सार्थकता स्तर 0.01 पर तालिका मान– 2.56

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान– 1.96

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के मध्य टी–मान 1.62 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर असार्थक पाया गया। अतः परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है'' पूर्णतः स्वीकृत होती है ।



तालिका–2

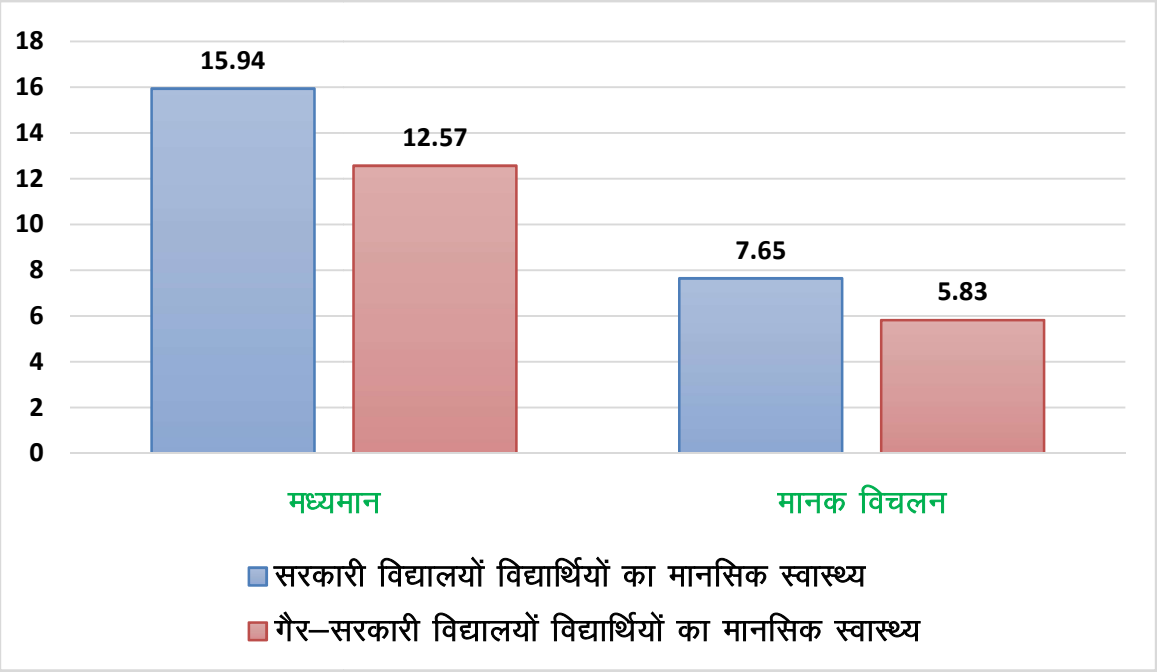
सरकारी तथा गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना

सरकारी विद्यालयों विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य		गैर–सरकारी विद्यालयों विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य		टी–मान ;कत्रि98द्ध	सार्थकता स्तर
मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	1.59	असार्थक
15.94	7.65	13.87	5.83		

सार्थकता स्तर 0.01 पर तालिका मान– 2.56

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान– 1.96

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के मध्य टी–मान 1.59 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर असार्थक पाया गया। अतः परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है'' पूर्णतः स्वीकृत होती है।



निष्कर्ष–

- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ–

- शिक्षा के द्वारा छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखा जाता है, जिसके कारण वे अपने भविष्य का निर्माण सही ढंग से कर सकते हैं।
- शिक्षकों को विद्यालय में विभिन्न दैनिक गतिविधियां करवानी होती है तथा साथ ही विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करना होता है। उनके व्यवहारों भावनात्मक संबंधों को नियंत्रित करना होता है। जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखा जा सके।
- माध्यमिक स्तर पर छात्र किशोरावस्था में होता है, इस स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न मानसिक तनाव समस्याओं से होकर गुजरना पड़ता है इस अवस्था में अभिभावकों को छात्रों का उचित सहयोग देना चाहिए जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में उचित मार्गदर्शन मिल सके।
- पाठ्यक्रम निर्माताओं को भी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए ऐसे विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो सके।

संदर्भग्रन्थ सूची

- Lal, Raman Bihari avam Manav, Ramnivas (2004-05). Shiksha manovigyan. Pratham sanskaran. Meerut: Rastogi Publications.
- Babanazari, L, Askari, P., & others. (2012). Spiritual Intelligence and Happiness for Adolescents in High School Life Sci Journal, Vol.9, No. 3.

- Shabani, J., Hassan, S.A, & Baba, M. (2011), Moderating Influence of Gender on the Link of Spiritual and Emotional Intelligences with Mental Health among Adolescents. Life Science Journal Vol 8, No 1, pp.106-112.
- Kaur, (2013). Spiritual Intelligence of Secondary School Teachers in Relation to their job Satisfaction International Journal of Educational Research and Technology Vol. 4, pp.104-109.
- Deoli CP. Or Dimri, Jaya (2014). "Mental health of students at different level of Socio-Econome States Indian Journal of psychometry and education", 45(1), PP 51-53
- Anjumn 5 (2015) influence od academic stress, spiritual intelligence and life catrsfiction mental health among students of professional and non professional courses. Unpublished thems department of physiology, Aligarh muslim university.
- Shrivas, Sandeep Kumar (2016). "Madhyamik str ke Chhatro ke mansik Swasthya ka adhyan karna" Indian Streams Research Journal, ISNN 2230-7850, vol-6, ISSUE 11 Dec 2016.
- Gangal, Dr. Meenu (2018). "Uch avam niman aadhyatmic budhi wale M.ed vidhyarthyon ki adhigam shailiyan", UGC approved journal no. 48514, ISSN 2249-894X. Vol-7, ISSUE 11 August 2018
- बाओ, डब्ल्यू. (2020). कोविड–19 और उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षणरू एक अध्ययन। ह्यूमन बिहेवियर एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज, 2(2), 113दृ115।
- धवन, एस. (2020). कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन अधिगमरू एक प्रभावी विकल्प।जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी सिस्टम्स, 49(1), 5दृ22।
- अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन. (2020). पब्लिकेशन मैनुअल ऑफ द अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (7वाँ संस्करण). अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2021). किशोर मानसिक स्वास्थ्य।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2022). विश्व मानसिक स्वास्थ्य रिपोटर्रू सभी के लिए मानसिक स्वास्थ्य विश्व स्वास्थ्य संगठन।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2022). विश्व मानसिक स्वास्थ्य रिपोटर्रू सभी के लिए मानसिक स्वास्थ्य। विश्व स्वास्थ्य संगठन।
- यूनेस्को। (2023). वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट 2023: शिक्षा में प्रौद्योगिकी। यूनेस्को।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2024). मानसिक स्वास्थ्यरू तथ्य पत्रक। जिनेवारू विश्व स्वास्थ्य संगठन।